

**Speech of Hon'ble Governor on the occasion of National Summit on "Focus Jharkhand as organic Hub in International Market" at Hotel Chanakya BNR, Ranchi on 13<sup>th</sup> June 2013 (Time 10:45 A.M.)**

It is a privilege for me to inaugurate this National Level Summit on "Focus Jharkhand as organic Hub in International Market" which is jointly organized by Chambers of Commerce and Industry of India (ASSOCHAM), NABARD, Jharkhand State Horticulture Mission, Organic Farming Authority of Jharkhand (OFAJ), Department of Industry and Jharkraft.

Friends, Organic farming system in India is not new and is being followed from ancient time. Organic farming is a system which avoids or largely excludes the use of synthetic inputs (such as fertilizers, pesticides, hormones, feed additives etc.) and to the maximum extent feasible relies upon crop rotations, crop residues, animal manures, off-farm organic waste, mineral grade rock additives and biological systems of nutrient mobilization and plant protection.

With the increase in population our compulsion would be not only to stabilize agricultural production but to increase it further in sustainable manner. The scientists have realized that the 'Green Revolution' with high input use has reached a plateau and is now sustained with diminishing return of falling dividends. Thus, a natural balance needs to be maintained at all cost for existence of life and property. The obvious choice for that would be more relevant in the present era, when these agrochemicals which are produced from fossil fuel and are not renewable and are diminishing in availability. It may also cost heavily on our foreign exchange in future.

I am pleased to inform that the Government of Jharkhand has formed an Organic Farming Authority which has already started its functioning. It gives me great satisfaction that the State is going ahead in Organic Cultivation of different crops which is a very good beginning for enhancing quality of environment by reducing Soil and Water Pollution ultimately benefiting the Human Health.

खेती के कार्य में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के उपयोग से हमारा Ecological System भी प्रभावित हो रहा है, जल, भूमि, वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है। मनुष्य के स्वास्थ्य में भी गिरावट हुआ है। इससे सामान्य व छोटे किसानों को कम जोत में बहुत

अधिक लागत लग रही है और खाद्य पदार्थ जहरीले भी हो रही है। इसलिए इस प्रकार के उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिए वक्त का तकाजा है कि हम जैविक खेती को अपनाएँ। इससे भूमि की उपजाऊ क्षमता में बढ़ोतरी तो होगी ही, रासायनिक खाद पर निर्भरता भी कम होगी। लागत राशि भी कम होगी, फसलों की पैदावार अच्छी होगी। मिट्टी की उपज शक्ति के दृष्टिकोण से भी जैविक खेती काफी बेहतर है। जैविक खाद का उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता बेहतर होगी, भूमि से पानी का वाष्पीकरण भी कम होगा। पर्यावरण की दृष्टि से भी जैविक खेती काफी बेहतर है। इससे भूमि के जल-स्तर में वृद्धि भी संभव है।

कहने का साफ मतलब है कि जैविक खेती की विधि, रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बेहतर है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खाद का उपयोग और अधिक लाभदायक होगा। जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत कम होगी, किसान भाइयों को अधिक आमदनी होगी। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में जैविक प्रोडक्ट अधिक खरे उतर पायेंगे। सामान्य पैदावार की अपेक्षा किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जैविक खेती के लिए जरूरी है कि जानवरों के मल-मूत्र इत्यादि का बड़ी मात्रा में जमा होना। गोबर, गोमूत्र इत्यादि द्वारा रासायनिक खाद से बंजर हुई जमीन का उपचार संभव है। अतएव, जैविक खेती के लिए हमें उत्तम कोटि के पशुपालन को बढ़ावा देना होगा। इसका अतिरिक्त फायदा [किसानों/ग्रामीणों](#) के लिए अतिरिक्त आय एवं पोषण के रूप में होगा। उस स्तर के पशुपालन के चारा के लिए बड़े पैमाने पर चारा फसलों एवं वृक्षों को लगाना, रोपण करना होगा। इसका संबंध **Watershed Treatment** के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा जल इकट्ठा एवं उपयोग करने से भी है। इस चर्चा से आप देख सकते हैं कि जैविक खेती वस्तुतः एकांगी कृषि प्रणाली मात्र नहीं है, वरन् एक वैकल्पिक जीवन पद्धति है, जो प्रकृति के साथ सहयोग कर तालमेल बिठाकर उसके **best products** का लाभ प्राप्त करती है। वास्तव में यही ऐसी जीवनपद्धति है, जिससे मानवजाति

लम्बे समय तक बच सकती है, अन्यथा रासायनिक उत्पादनों पर आधारित वर्तमान कृषि व्यवस्था से मानव सभ्यता लंबे समय तक टिक नहीं पायेगी।

एक बार मैं फिर आप सभी आयोजकों को बधाई देता हूँ और साथ ही कहना चाहूँगा कि किसानों को जैविक खेती प्रणाली को अपनाने के लिए जागरूक करने का हर संभव कोशिश करें। इस कार्य में सरकारी विभागों स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ-साथ बुद्धिजीवियों को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी।

जय हिन्द !

जय झारखण्ड !